DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Accredited with 'A' Grade by NAAC
Kargi Road, Kota, Dist.-Bilaspur (C.G.) - 495113
Ph. : 07753-253801 Fax : 07753-253728
e-mail : info@cvru.ac.in, visit us at : www.cvru.ac.in

क्र.1151(अ) / सी.व्ही.आर.यू. / कु.स. / 2026 करगी रोड कोटा, बिलासपुर, दिनांक : 07.05.2026

प्रति,

अध्यक्ष महोदय,
छत्तीसगढ़ निजी विश्वविद्यालय विनियामक आयोग,
छत्तीसगढ़ शासन,
रायपुर (छ.ग.)

विषय :– डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय का माह अप्रैल – 2026 का मासिक प्रगति प्रतिवेदन।

आदरणीय महोदय,

उपरोक्त विषयांतर्गत, डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय द्वारा अप्रैल – 2026 का मासिक प्रतिवेदन प्रेषित किया जा रहा है।

सादर,

कुलसचिव

पृ.क्र.1151(ब) / सी.व्ही.आर.यू. / कु.स. / 2026 करगी रोड कोटा, बिलासपुर, दिनांक : 07.05.2026

प्रतिलिपि :–
1. माननीय कुलाधिपति महोदय के निज सहायक को माननीय कुलाधिपति महोदय को सादर् सूचनार्थ प्रेषित।
2. माननीय कुलपति जी के निज सहायक को माननीय कुलपति जी को सादर् सूचनार्थ प्रेषित।
3. कार्यालय प्रति।

कुलसचिव

डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय

करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

मासिक प्रगति पत्रक

माह :– अप्रैल – 2026

01	विश्वविद्यालय का नाम एवं स्थापना वर्ष।	डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, स्थापना वर्ष नवम्बर 2006,
02	विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों की जानकारी।	फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नालॉजी बी. टेक. (कम्प्यूटर साईस) बी. टेक. (इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्यूनिकेशन) बी. टेक. (इलेक्ट्रिकल) बी. टेक. (मेकनिकल) बी. टेक. (सिविल) बी. वोक (वोकेशनल) एम. टेक. (कम्प्यूटर साईस) एम. टेक. (डिजीटल कम्यूनिकेशन) एम. टेक. (प्रोडक्शन इंजी.) एम. टेक. (पावर सिस्टम) एम. टेक. (साफटवेयर इंजी.) एम. टेक. (वी.एल.एस.आई.) डिप्लोमा (सिविल इंजी.) डिप्लोमा (कम्प्यूटर साईस) डिप्लोमा (ईई) डिप्लोमा (मेकनिकल इंजी.) अग्नि सुरक्षा प्रबंधन में स्नातक डिप्लोमा कार्यक्रम (डीएफएसएम) फैकल्टी ऑफ एजुकेशन एण्ड फिजिकल एजुकेशन बैचलर ऑफ एजुकेशन (बी. एड.) मास्टर ऑफ एजुकेशन (एम. एड.) बैचलर ऑफ फिजिकल एजुकेशन (बी.पी.ई.) मास्टर ऑफ फिजिकल एजुकेशन (एम.पी.ई.) फैकल्टी ऑफ वाणिज्य एवं प्रबंधन बैचलर ऑफ कामर्स (बी. काम.) मास्टर ऑफ कामर्स (एम. काम.)

		मास्टर ऑफ बिजिनेस एडमिनिस्ट्रेशन (एम.बी.ए.) बैचलर ऑफ बिजिनेस एडमिनिस्ट्रेशन (बी.बी.ए) पोस्ट ग्रेजुऐट डिप्लोमा इन बिजिनेस मैनेजमेंट (पीजीडीबीएम) <u>फैकल्टी ऑफ इन्फार्मेशन टेक्नालॉजी</u> पीजी.डीसी.ए. (पोस्ट ग्रेज्युएट डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन) बी.सी.ए. (बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन) डी.सी.ए. (डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन) एम.एस.सी. (कम्प्यूटर साईंस) एम.एस.सी. (आई. टी.) <u>फैकल्टी ऑफ आर्ट्स</u> पोस्ट ग्रेज्युट डिप्लोमा इन कर्मकाण्ड पोस्ट ग्रेज्युट डिप्लोमा इन ज्योतिश एण्ड वास्तुशास्त्र पोस्ट ग्रेज्युट डिप्लोमा प्रोग्राम इन जियोस्पेशियल टेक्नोलॉजी बी. ए. (हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत साहित्य, छत्तीसगढ़ी भाषा, भूगोल, शिक्षा, राजनीति शास्त, अर्थशास्त्र, इतिहास, समाज शास्त्र) एम. ए. (हिन्दी साहित्य) एम. ए. (अंग्रेजी साहित्य) एम. ए. (संस्कृत साहित्य) एम. ए. (छत्तीसगढ़ी) एम. ए. (भूगोल) एम. ए. (शिक्षा) एम. ए. (राजनीति शास्त्र) एम. ए. (अर्थशास्त्र) एम. ए. (इतिहास) एम. ए. (समाज शास्त्र) एम. ए. (ग्रामीण प्रौद्योगिकी) बी. लिब. एम. लिब. एम. एस. डब्ल्यू. बी. जे. एम. जे. प्रदर्शन और ललित कला में स्नातक (वादन, गायन एवं वाद्य) प्रदर्शन और ललित कला में स्नातकोत्तर <u>फैकल्टी ऑफ साईंस</u> पोस्ट ग्रेज्युट डिप्लोमा इन रूरल डेवलपमेंट

		बी. एस. सी. (भौतिकी, गणित, रसायन शास्त्र, कम्प्यूटर साईंस, ग्रामीण प्रौद्योगिकी, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, सूक्ष्म जीवविज्ञान) एम. एस. सी. (गणित) एम. एस. सी. (भौतिकी) एम. एस. सी. (एप्लाएड साईंस) एम. एस. सी. (प्राणी शास्त्र) एम. एस. सी. (वनस्पति शास्त्र) एम. एस. सी. (रसायन) एम. एस. सी. (सूक्ष्म जीव विज्ञान) एम. एस. सी. (जैव प्रौद्योगिकी) एम. एस. सी. (ग्रामीण प्रौद्योगिकी) <u>फैकल्टी ऑफ लॉ</u> बी.ए.एल.एल.बी बी.काम. एल.एल.बी. एल.एल.बी. एल.एल.एम. <u>फैकल्टी ऑफ फार्मेसी</u> बी. फार्मा डी. फार्मा एम. फार्मा <u>शोध पाठ्यक्रम</u> <u>दूरवर्ती शिक्षा के पाठ्यक्रम</u> मास्टर ऑफ बिजिनेस एडमिनिस्ट्रेशन (एमबीए), बैचेलर ऑफ बिजिनेस एडमिनिस्ट्रेशन (बीबीए), मास्टर ऑफ कामर्स (एम. काम.) बैचेलर ऑफ कामर्स (बी. काम) बैचेलर ऑफ लाईब्रेरी एण्ड इन्फारमेंसन साईंस (बी. लिब) मास्टर ऑफ लाईब्रेरी एण्ड इन्फारमेंसन साईंस (एम. लिब) मास्टर ऑफ आर्टस (अंग्रेजी) मास्टर ऑफ आर्टस (हिन्दी) मास्टर ऑफ आर्टस (संस्कृत) मास्टर ऑफ आर्टस (इतिहास) बैचेलर ऑफ आटस (बीए)
03	क्या विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों के लिए संबंधित विनियामक इकाईयों के द्वारा सक्षम अनुमति प्राप्त कर ली गई है? यदि हां, तो तत्संबंधी आदेश	हॉ, विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों के लिये संबंधित विनियामक इकाईयों के द्वारा सक्षम अनुमति प्राप्त कर ली गई है। तत्संबंधी

	की छायाप्रति।	आदेश की छायाप्रति पूर्व में प्रेषित की जा चुकी है।
04	विश्वविद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधाएं (भवन, प्रयोगशाला, ग्रंथालय, खेल मैदान, फर्नीचर, उपकरण एवं अन्य सुविधायें।)	विश्वविद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधायें पर्याप्त है।
05	क्या विश्वविद्यालय में उपलब्ध मूलभूत सुविधायें संचालित पाठ्यक्रमों के अनुरूप हैं?	उपलब्ध मूलभूत सुविधायें, पाठ्यक्रमों के अनुरूप है। नए उपकरणों का क्रय किया जा चुका है। नया फर्नीचर एवं लाईब्रेरी के लिये पुस्तकों इत्यादि का क्रय भी किया जा चुका है।
06	विश्वविद्यालय में कार्यरत् अधिकारियों की जानकारी।	विश्वविद्यालय में 15 विभाग संचालित है, जिसमें शिक्षक एवं गैर शिक्षण स्टाफ की नियुक्ति नियमानुसार मापदण्डों के आधार पर एवं योग्यता के अनुरूप की जाती है।
07	विश्वविद्यालय में कार्यरत् शिक्षक।	विश्वविद्यालय में 15 विभाग संचालित है, जिसमें शिक्षक एवं गैर शिक्षण स्टाफ की नियुक्ति नियमानुसार मापदण्डों के आधार पर एवं योग्यता के अनुरूप की जाती है। विभाग में छात्र–छात्राओं की संख्या के आधार पर शिक्षकों एवं गैर शिक्षण स्टाफ की नियुक्ति की गई है।
08	क्या विश्वविद्यालय में कार्यरत् शिक्षकों की योग्यता एवं अनुभव निर्धारित मापदंडों के अनुरूप है?	शिक्षकों की नियुक्ति नियमानुसार की गई है एवं मापदंडो के अनुरूप है। शैक्षणिक पदों पर संविदा शिक्षकों को नियमित करने एवं रिक्त पदों में नियमित नियुक्ति करने की प्रक्रिया जारी है।
09	क्या विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों के लिए शिक्षकों की संख्या मापदंडों के अनुरूप है ?	शिक्षकों की संख्या मापदंडों के अनुरूप है।
10	क्या विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के लिए परिनियम / अध्यादेश का अनुमोदन प्राप्त किया गया है? यदि हां, तो उसका विवरण।	परिनियम एवं अध्यादेश विधिवत् अनुमोदित है एवं माननीय आयोग को प्रेषित किया जा चुका है। विश्वविद्यालय के परिनियम के आधार पर निम्न ईकाइयों का गठन किया गया है, जिसमें अंतर्गत शासी निकाय, प्रबंध मंडल एवं अकाद्मिक परिषद् का गठन किया गया है, जिसमें अकाद्मिक परिषद् द्वारा समय–समय पर पाठ्यक्रमों में परिवर्तन कर अपग्रेड किया जाता है, तथा उच्च कोटि के लैब, लाईब्रेरी का निर्माण पाठ्यक्रमानुसार किया गया है।

		अकादमिक परिषद् द्वारा समय–समय पर शोध कार्य हेतु सेमीनार, वर्कशाप एवं फेकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम भी किया जाता है।
11	क्या विनियामक आयोग/शासन के द्वारा निजी क्षेत्र विश्वविद्यालय का निरीक्षण किया गया है? यदि हां, तो निरीक्षण में पाई गई कमियां तथा कमियों को दूर करने के लिये विश्वविद्यालय को दिये गये निर्देश, क्या विश्वविद्यालय द्वारा शासन /विनियामक आयोग के निर्देशों का पालन किया गया है?	हॉ, माननीय आयोग के द्वारा विश्वविद्यालय का निरीक्षण दिनांक 20 दिसंबर 2025 को किया गया है। माननीय आयोग के निर्देशों का पालन नियमानुसार किया जा रहा है।
12	विश्वविद्यालय की वित्तीय स्थिति पर संक्षिप्त प्रतिवेदन।	विश्वविद्यालय द्वारा समस्त पाठ्यक्रमों में प्रवेश नियमानुसार एवं अध्यादेशों के अनुरूप प्रवेशित छात्र–छात्राओं द्वारा दी गई शुल्क द्वारा विश्वविद्यालय में अलग–अलग विभागों के लिये भवन, प्रयोगशालाओं का निर्माण एवं उच्चकोटि के आधुनिक उपकरणों का क्रय, समस्त विभाग के अधिकारीगण, शिक्षणगण एवं कर्मचारियों के लिये फर्नीचर, ग्रंथालय में विभागानुसार पुस्तकों का क्रय एवं ग्रंथालय में छात्र–छात्राओं के लिये अध्ययन करने के लिये उच्चकोटि की व्यवस्था मापदण्डों के अनुरूप, आवागमन साधन एवं अन्य सुविधाओं की पूर्ति की जा रही है। वर्तमान में विश्वविद्यालय द्वारा बैंक ऑफ इंडिया द्वारा भी ऋण लिया गया है, विश्वविद्यालय की पितृ संस्था द्वारा भी विश्वविद्यालय को समय–समय पर आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है। विश्वविद्यालय की वित्तीय स्थिति नियमानुसार नियमित रूप से है।
13	छात्रों से विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए, लिये जाने वाले शुल्क की जानकारी।	सत्र 2025–26 के शुल्क अनुमोदन माननीय आयोग के द्वारा किया जा चुका हैं। एवं 2026–27 के शुल्क अनुमोदन हेतु माननीय आयोग को भेजा गया है।
14	क्या शिक्षण शुल्क के अतिरिक्त अन्य शुल्क विद्यार्थियों से लिये जाते हैं? यदि हां तो उसका औचित्य।	अनुमोदित अध्यादेशों के अनुसार ही शुल्क लिया जाता है, अतिरिक्त शुल्क का कोई प्रावधान नहीं है।
15	क्या विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रम यूजीसी, एआईसीटीई या अन्य विनियामक इकाईयों के मार्गदर्शक बिन्दुओं के अनुरूप हैं?	विश्वविद्यालय के समस्त पाठ्यक्रम यूजीसी के अधिनियम 1956 की धारा (22) के अनुरूप है तथा एआईसीटीई, एनसीटीई, बार काउंसिल ऑफ इंडिया, फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया

		या अन्य विनियामक इकाईयों के अनुसार है एवं अनुमोदित है, जिसका निरीक्षण संबंधित इकाईयों द्वारा तथा आयोग द्वारा किया जा चुका है एवं समय समय पर किया जाता है।
16	विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियां।	कबीर जन विकास समूह द्वारा आयोजित कबीर जन उत्सव–2026 में श्री संतोष चौबे, वरिष्ठ कवि–कथाकार, कुलाधिपति, डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय एवं निदेशक, विश्व रंग को "राष्ट्रीय शब्द निरंतर सम्मान–2026" से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय हैं कि, उन्हें यह प्रतिष्ठित सम्मान कबीर को अपने लोकगायन से संपूर्ण विश्व में पहुँचाने वाले विश्व प्रसिद्ध कबीर लोकगायक पद्मश्री प्रहलाद सिंह टिपाणिया, पद्मश्री कालूराम बामनिया, पद्मश्री भेरूसिंह चौहान ने अपने करकमलों से प्रदान किया गया। यह सम्मान समारोह एग्रीकल्चर कॉलेज, इंदौर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री संतोष चौबे ने "वर्तमान संदर्भ में कबीर की जरूरत" पर अपना महत्वपूर्ण व्याख्यान देते हुए कहा कि वर्तमान संदर्भ में ही नहीं इस जगत में कबीर की प्रासंगिकता हमेशा बनी रहेगी। आज संपूर्ण विश्व को कबीर के ढाई आखर प्रेम की बहुत जरूरत है। उन्होंने कबीर को उत्तर भारत के भक्ति आंदोलन का पहला कवि बताते हुए उन्हें भारतीय आधुनिकता का प्रतिनिधि व्यक्तित्व भी कहा। उन्होंने कहा कि 14 वीं सदी के कबीर के सौ डेढ़ सौ बरस बाद यूरोप में नवजागरण शुरू हुआ, जिसमें विज्ञान का आगमन हुआ और कई नई विचारधाराओं का जन्म हुआ । कबीर के सामने वे सभी विचारधाराएँ बेकार मालूम होती हैं, जबकि कबीर भारतीय आधुनिकता के प्रतिनिधि व्यक्तित्व हैं। कबीर की भक्ति में प्रेम पहला और विशेष तत्व है। यह भी कबीर की आधुनिकता है। उनकी रचनाओं में प्रेम के साथ करुणा भी है और तार्किकता भी। कबीर गुरु को महत्व देते हैं। आज हम गूगल या एआई को गुरु मान रहे हैं पर इस गुरु में भावनात्मक संबल नहीं मिल

		सकता। कबीर इसलिए भी आधुनिक हैं क्योंकि उनमें खोज और अन्वेषण की बेचौनी भी है। कबीर जन उत्सव समिति, कबीर जन विकास समूह एवं ढाई आखर द्वारा विगत 33 वर्षों से निरंतर कबीर जन उत्सव का आयोजन कर कबीर को जन–जन तक पहुँचाने का अनुकरणीय कार्य किया जा रहा हैं। विकसित भारत @ 2047 के अंतर्गत दिनॉक 14 अप्रैल 2026 को डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय और इंडियन एयर फोर्स के बीच शिक्षा, शोध एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ करने हेतु एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस अनुबंध का उद्देश्य भारतीय वायु सेना के अधिकारियों एवं जवानों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना, शहीद परिवारों की पत्नियों एवं बच्चों को निःशुल्क एवं अधिकतम शुल्क छूट के साथ उच्च शिक्षा प्रदान करना तथा सेवानिवृत्ति अग्निवीर युवाओं को भी विशेष शैक्षणिक अवसर उपलब्ध कराना है। इस एमओयू के तहत दोनों संस्थान शोध, नवाचार एवं कौशल विकास के क्षेत्र में भी सहयोग करेंगे, जिससे भारतीय वायु सेना से जुड़े कार्मिकों को आधुनिक शिक्षा और अनुसंधान से जोड़ने में सहायता मिलेगी। नई दिल्ली में आयोजित इस कार्यक्रम में भारतीय वायु सेना की ओर से एयर वाइस मार्शल एस. सी. सिदाना वीएसएम एवं विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव डॉ. अरविंद कुमार तिवारी ने समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. अरविंद कुमार तिवारी ने कहा, कि यह एमओयू हमारे लिए गर्व का विषय है। डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय सदैव राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करता रहा है। भारतीय वायु सेना के वीर जवानों एवं उनके परिवारों को शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाना हमारा नैतिक दायित्व है। इस पहल से शहीद परिवारों और

		सेवानिवृत्ति अग्निवीर युवाओं को नई दिशा और अवसर प्राप्त होंगे। वहीं एयर वाइस मार्शल एस. सी. सिदाना ने अपने वक्तव्य में कहा भारतीय वायु सेना अपने अधिकारियों और उनके परिवारों के समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध है। डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय के साथ यह समझौता हमारे जवानों के बच्चों और शहीद परिवारों को उच्च शिक्षा के बेहतर अवसर प्रदान करेगा। यह सहयोग शिक्षा और नवाचार के क्षेत्र में एक मजबूत कदम है। विकसित भारत @ 2047 के अंतर्गत दिनॉक 15 अप्रैल 2026 को डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ अधिकतम शैक्षणिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल की जा रही है। विश्वविद्यालय विशेष रूप से आर्थिक रूप से पिछड़े एवं प्रतिभावान छात्र–छात्राओं को केंद्र में रखकर विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं का लाभ सुनिश्चित कर रहा है। इसी क्रम में विश्वविद्यालय परिसर में एक दिवसीय विशेष प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्यालय से विशेषज्ञ राजीव नागार्च ने जानकारी दी। जिसमें प्राध्यापकों, अधिकारियों एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने सहभागिता की। कार्यशाला का उद्देश्य विद्यार्थियों को सरल एवं सहज भाषा में छात्रवृत्ति योजनाओं की जानकारी देना तथा उन्हें आवेदन प्रक्रिया के प्रति जागरूक बनाना था। कार्यशाला के दौरान विशेषज्ञों एवं विश्वविद्यालय के अधिकारियों द्वारा शासन की विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं, पात्रता मानदंड, आवश्यक दस्तावेज, ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया एवं समय–सीमा के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही विभिन्न कंपनियों के सीएसआर (CSR) के माध्यम से मिलने वाली छात्रवृत्तियों के बारे में भी विद्यार्थियों को अवगत कराया गया। विद्यार्थियों

		की शंकाओं का समाधान भी मौके पर ही किया गया। जिससे उन्हें पूरी प्रक्रिया स्पष्ट रूप से समझ में आ सके। कार्यक्रम में यह विशेष रूप से बताया गया कि सामान्य वर्ग के आर्थिक रूप से कमजोर छात्र–छात्राओं को भी छात्रवृत्ति का लाभ दिया जाएगा। इसके अलावा प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने हेतु विशेष मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया जाएगा, ताकि वे अपनी पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकें। विकसित भारत @ 2047 के अंतर्गत दिनॉक 17 अप्रैल 2026 को डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय में ओपन कैंपस चयन का आयोजन किया गया। इस आयोजन में इंजीनियरिंग, फार्मेसी, ड साइंस, मैनेजमेंट एवं आर्ट्स सहित विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस दौरान देश–विदेश की प्रतिष्ठित कंपनियों ने कैंपस इंटरव्यू के माध्यम से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का चयन किया, जिसमें कुल 55 विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में अवसर प्राप्त हुआ। तीन चरण की कठिन चयन प्रक्रिया के बाद विद्यार्थियों का चयन मल्टीनेशनल और नेशनल कंपनियों में किया गया है। चयनित विद्यार्थी देश और विदेश के अलग–अलग क्षेत्रों में कार्य करते हुए विश्वविद्यालय और राज्य का नाम रोशन करेंगे। चयनित विद्यार्थी मिलिट्री एयरक्राफ्ट, सोलर सॉल्यूशन, फाइनेंस, स्टील, ऑटोमोबाइल, प्रोडक्ट्स, टेलीकॉम एवं टेक्सटाइल सेक्टर में अपनी सेवाएं देंगे, जो विश्वविद्यालय की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा एवं कौशल विकास की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का प्रत्यक्ष परिणाम है। प्लेसमेंट ड्राइव में जीई एयरोस्पेस पुणे, जेनस ग्रुप उत्तराखंड, एसआरएफ लिमिटेड गुजरात, चौंपियन सेरेमिक प्राइवेट लिमिटेड चांपा, एस्कॉर्ट्स लिमिटेड, स्वतंत्र माइक्रो फाइनेंस, हाईटिक नेक्स्ट इंजीनियरिंग टेलीकॉम सहित अनेक कंपनियों

		ने भाग लिया और विद्यार्थियों का साक्षात्कार लिया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. प्रदीप कुमार घोष ने इसे विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता एवं उद्योगों से सुदृढ़ संबंधों का परिणाम बताते हुए कहा कि भविष्य में भी प्लेसमेंट के अवसर उपलब्ध कराए जाते रहेंगे। साथ ही नए तकनीकों, शोध आधारित शिक्षा को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर सक्षम बनाने के प्रयास जारी रहेंगे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अरविंद कुमार तिवारी ने कहा कि इस प्रकार के ओपन कैंपस स्टूडेंट्स को बेहतर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराते हैं। साथ ही उद्योगों की मांग के अनुरूप कौशल विकास, प्रशिक्षण एवं व्यक्तित्व संवर्धन पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है, ताकि विद्यार्थी प्रतिस्पर्धी परिवेश में सफल हो सकें। विकसित भारत @ 2047 के अंतर्गत दिनॉक 21 अप्रैल 2026 को सेंटर फॉर डिस्टेंस एंड ऑनलाइन एजुकेशन (सीडीओई) द्वारा दूरस्थ शिक्षा के नव–प्रवेशित शिक्षार्थीयों के लिए एक वर्चुअल इंडक्शन प्रोग्राम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की कार्यप्रणाली और उनके संबंधित पाठ्यक्रमों की संरचना से अवगत कराना था। गूगल मीट के माध्यम से आयोजित इस सत्र में 80 से अधिक शिक्षार्थीयों ने निरंतर अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ दोपहर 12 बजे डॉ. राकेश कुमार यादव, एसोसिएट प्रोफेसर के स्वागत भाषण के साथ हुआ। उन्होंने सभी नव–प्रवेशित शिक्षार्थीयों का विश्वविद्यालय परिवार में स्वागत किया और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर डॉ. अभिषेक कुमार पाठक, डायरेक्टर (सीडीओई) ने दूरस्थ

		शिक्षा के मूल उद्देश्यों और इसके लचीलेपन पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने शिक्षार्थीयों को प्रेरित किया कि वे समय प्रबंधन और स्व–अनुशासन के माध्यम से अपने पेशेवर और अकादमिक जीवन में कैसे संतुलन स्थापित कर सकते हैं। इस अवसर पर किरण तिग्गा एकेडमिक कोऑर्डिनेटर ने विश्वविद्यालय के अकादमिक कैलेंडर, अध्ययन सामग्री और ई–संसाधनों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ साझा कीं। सत्र के दौरान अमृता वर्मा द्वारा पीपीटी प्रेजेंटेशन के माध्यम से स्क्रीन शेयर की गई, जिससे शिक्षार्थीयों को ऑनलाइन इंडक्शन प्रोग्राम के मुख्य बिंदुओं को समझने में सहायता प्राप्त हुई। डॉ. सतीश साहू, फैकल्टी कोऑर्डिनेटर मैनेजमेंट ने वाणिज्य और प्रबंधन कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने उद्योग की वर्तमान माँगों, व्यावहारिक ज्ञान असाइनमेंट की महत्ता और प्रोजेक्ट वर्क के अकादमिक मानकों पर गहन चर्चा की ताकि विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रम के व्यावहारिक पक्ष को सुदृढ़ कर सकें। डॉ. मंजू साहू, फैकल्टी कोऑर्डिनेटर आर्ट्स ने कला संकाय के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विषयों की महत्ता, पाठ्यक्रम संरचना और सत्रांत परीक्षाओं के मूल्यांकन मापदंडों के विषय में शिक्षार्थीयों को निर्देशित किया। कार्यक्रम के अंतिम चरण में डॉ. विशाखा बाजपेयी, प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर आर्ट्स ने सभी विषय विशेषज्ञों, संकाय सदस्यों और 80 से अधिक नव–प्रवेशित शिक्षार्थीयों को उनके समय और ध्यान के लिए औपचारिक धन्यवाद ज्ञापित किया। विकसित भारत @ 2047 के अंतर्गत दिनॉक 22 से 25 अप्रैल 2026 को राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस), एनसीसी एवं स्काउट–गाइड इकाई द्वारा गोद ग्राम अमने, टाडा और पंडाकापा में जनगणना जागरूकता अभियान सफलतापूर्वक संचालित किया गया। इस अभियान में लगभग 50 विद्यार्थियों ने सक्रिय

		सहभागिता निभाते हुए ग्रामीणों को स्व–गणना की प्रक्रिया की जानकारी दी तथा उन्हें जनगणना कार्य में सहयोग के लिए प्रेरित किया। विद्यार्थियों ने लोगों से अपील की कि वे बिना किसी डर या झिझक के सही एवं सटीक जानकारी उपलब्ध कराएं, ताकि जनगणना प्रक्रिया पारदर्शी और प्रभावी ढंग से संपन्न हो सके। अभियान के दौरान संबंधित ग्रामों के सरपंच एवं विद्यालयों के शिक्षक भी उपस्थित रहे और उन्होंने इस पहल की सराहना की। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने यह भी सुनिश्चित किया कि प्रत्येक उन्नत भारत अभियान के तहत गोद ग्राम में वे शासकीय टीम के साथ समन्वय स्थापित कर जनगणना कार्य को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभाएंगे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. प्रदीप कुमार घोष ने कहा कि जनगणना राष्ट्र के विकास की दिशा तय करने वाला महत्वपूर्ण आधार है। उन्होंने कहा कि सही और सटीक आंकड़ों के माध्यम से ही सरकार प्रभावी योजनाएँ बना सकती है, इसलिए प्रत्येक नागरिक को इसमें अपनी जिम्मेदारी समझते हुए पूर्ण सहयोग देना चाहिए। कुलसचिव डॉ. अरविंद कुमार तिवारी ने अपने वक्तव्य में कहा कि जनगणना केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक प्रगति का मजबूत आधार है। उन्होंने विद्यार्थियों की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि युवाओं की सहभागिता से समाज में जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना और अधिक सुदृढ़ होती है। अभियान में अमने के सरपंच श्री अश्विनी खुसरो, टाडा के सरपंच श्री संजय कौशिक के साथ विश्वविद्यालय से कार्यक्रम समन्वयक डॉ. जय शंकर यादव, लेफ्टिनेंट संदीप सिंह ठाकुर, डॉ. अभिषेक शर्मा, श्री जितेन्द्र गुप्ता (आईटी), डॉ. मनीष मुखर्जी, हेमन्त सिंह राजपूत, प्रतीक सिंह ठाकुर एवं राजकुमार लाल सहित अन्य

		गणमान्यजन उपस्थित रहे। विकसित भारत @ 2047 के अंतर्गत दिनॉक 23 अप्रैल 2026 को डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय में स्थित जगन्नाथ प्रसाद चौबे केंद्रीय लाइब्रेरी में विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई और विद्यार्थियों को पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया। महापुरुषों, धार्मिक और विषयगत पुस्तकों के बारे में सभी को जानकारी दी गई। कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में उपस्थित विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. प्रदीप कुमार घोष ने कहा कि युवा पीढ़ी लगातार पढ़ने की प्रवृत्ति से दूर होती जा रही है। हम छोटे वीडियो में अधिक व्यस्त रहते हैं। उन्होंने कहा कि हमें इससे दूर होकर पढ़ने की आदत को निरंतर बढ़ाना होगा। किताबें व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं और उनसे सार, तत्व तथा जीवन की सीख मिलती है, जो लेखन में भी आगे बढ़ने में सहायक होती है। उन्होंने यह भी कहा कि जितने भी महापुरुष और देश–विदेश के विद्वान हुए हैं, उनमें एक समानता अवश्य रही है कि वे सभी पुस्तकें पढ़ते थे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अरविंद कुमार तिवारी ने कहा कि संदेश और विचारों का प्रभावी संप्रेषण पुस्तकों के माध्यम से ही संभव है। इसे बनाए रखने के लिए हमें निरंतर पढ़ने की आदत विकसित करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि डॉ.सी.व्ही.रमन विश्वविद्यालय पिछले तीन वर्षों से लगातार "पुस्तक यात्रा" का आयोजन कर रहा है। प्रतिवर्ष 1,000 से अधिक स्कूलों में पहुंचकर विद्यार्थियों को पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है और उन्हें पुस्तकें भी प्रदान की जाती हैं। उन्होंने कहा कि शब्दों की समृद्धि बढ़ाने के लिए पढ़ना अत्यंत आवश्यक है। डॉ.सी.व्ही.रमन विश्वविद्यालय परिसर में स्थापित जगन्नाथ प्रसाद चौबे

		केंद्रीय पुस्तकालय पूर्ण रूप से ऑटोमेटेड है। यह मध्य भारत की सबसे पहले और एकमात्र ऑटोमेटेड लाइब्रेरी है । जहां विद्यार्थियों को ऑटोमेटिक रूप से पुस्तक जारी की जाती है । इसी तरह लाइब्रेरी में पुस्तक वापस करने के लिए भी ऑटोमेटिक प्रक्रिया भी है । लाइब्रेरी में पुस्तक लेने और पुस्तक जमा करने के लिए किसी भी अधिकारी या कर्मचारी सहयोगी की आवश्यकता नहीं होती। विद्यार्थी स्वयं ऑनलाइन पुस्तक का चयन कर लेते हैं और पुस्तक का लोकेशन भी बता दिया जाता है । इसी तरह लाइब्रेरी में पुस्तक जमा करने के लिए भी एक स्थान सुनिश्चित किया गया है । जिसमें स्कैन होकर वह पुस्तक स्वत स्वतः ही ऑटोमेटिक तरीके से वापस कर ली जाती है। इस अवसर पर लाइब्रेरियन डॉ. संगीता सिंह ने स्वागत भाषण दिया और पुस्तकों के महत्व को विस्तार से विद्यार्थियों के सामने रखा। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में प्राध्यापक, विद्यार्थी और पुस्तकालय के अधिकारी – कर्मचारी उपस्थित रहे। विकसित भारत @ 2047 के अंतर्गत दिनॉक 24 से 25 अप्रैल 2026 को डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय सेमिनार का विषय जनजातीय समाज, पर्यावरण एवं विकासः एक बहु–विषयक और अंतर्विषयक विश्लेषण था। दो दिनों तक विषय विशेषज्ञों ने विचार मंथन किया। यह आयोजन डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, आईसीएसएसआर एवं डिपार्टमेंट ऑफ सोशल साइंस के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। सेमिनार का उद्देश्य जनजातीय समाज, पर्यावरण एवं विकास के परस्पर संबंधों पर बहु–विषयक एवं अंतर्विषयक दृष्टिकोण से सार्थक विमर्श करना था। इस अवसर पर लगभग 100 शोध–पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से 50 से अधिक शोधार्थियों ने अपने शोध–पत्र प्रस्तुत किए। उद्घाटन सत्र में

		प्रोफेसर सौभाग्य रंजन पारधी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जब भी पर्यावरण संबंधी नीतियों का निर्माण किया जाता है, तब जनजातीय समाज की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि जनजातीय समुदाय प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीने की परंपरा का जीवंत उदाहरण है, इसलिए किसी भी पर्यावरणीय नीति में उनकी भागीदारी और अनुभव अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय और राज्य स्तर पर सोचने से पहले अपने घर से शुरुआत करनी होगी। जब घर का हर सदस्य जागरूक होगा और हर परिवार पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य करेगा, तभी हम वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान स्थापित कर सकेंगे। उनका कहना था कि वास्तविक विकास केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसमें सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय संतुलन भी शामिल होना चाहिए। विकास का उद्देश्य मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है, न कि केवल संसाधनों का अंधाधुंध दोहन। इस अवसर पर दयानंद एंग्लो वैदिक पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) के प्रो. संजय तिवारी ने कहा कि ऐसे आयोजन शोध एवं विचारों के आदान–प्रदान को बढ़ावा देते हैं। निश्चित रूप से इस प्रकार के आयोजनों के माध्यम से हमें जनजातीय समाज के पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने तथा प्रकृति संरक्षण के क्षेत्र में कार्य करने की दिशा मिलती है। उन्होंने यह भी कहा कि छत्तीसगढ़ में जनजातीय समुदाय की बड़ी संख्या निवास करती है, और यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि यह विश्वविद्यालय जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र में स्थापित है। इससे यहां के विद्यार्थी एवं प्राध्यापक इस दिशा में उत्कृष्ट कार्य कर सकेंगे। मुख्य अतिथि पं. सुंदर लाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय बिलासपुर के कुलपति प्रो. वीके

		सारस्वत ने कहा कि ऐसे विषयों पर होने वाली चर्चा आगामी पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि आज एक ओर विकास तेजी से हो रहा है, वहीं दूसरी ओर मानसिक तनाव और अवसाद भी बढ़ रहे हैं, जिसका प्रमुख कारण प्रकृति के साथ समन्वय का अभाव है। उन्होंने कहा कि मानव को प्रकृति की रक्षा के लिए भेजा गया था, लेकिन उसने प्रकृति का अत्यधिक दोहन किया है। समापन सत्र में मुख्य वक्ता अतिरिक्त सचिव छत्तीसगढ़ शासन प्रो. रूपेंद्र कवि ने कहा कि सेमिनार केवल विचार प्रस्तुत करने का माध्यम नहीं, बल्कि विचारों के मंथन का एक सशक्त मंच है। उन्होंने बताया कि भारत की जनजातीय आबादी का एक बड़ा हिस्सा छत्तीसगढ़ में निवास करता है, जिससे यह क्षेत्र अध्ययन और नीति–निर्माण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है। उन्होंने कहा कि विकास को केवल भौतिक या आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि जीवन के अनुभव के रूप में समझना आवश्यक है। जनजातीय समाज की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली प्रकृति पर आधारित होती है, जो सतत विकास की आधारशिला है। उन्होंने जोर दिया कि पारंपरिक ज्ञान को विकास की प्रक्रिया में शामिल करना चाहिए तथा नीतियां लोगों पर थोपने के बजाय, लोगों के साथ मिलकर बनाई जानी चाहिए। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. प्रदीप कुमार घोष ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि जनजातीय समाज प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, बल्कि एक जीवंत शक्ति के रूप में देखता है। उन्होंने कहा कि जब हम अपनी सोच को प्रकृति से जोड़ते हैं, तब हम स्वाभाविक रूप से उसके संरक्षण की दिशा में आगे बढ़ते हैं और प्रकृति के विरुद्ध जाने की प्रवृत्ति स्वतः समाप्त हो जाती है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अरविंद कुमार तिवारी ने कहा कि जनजातीय बाहुल्य

		क्षेत्र में विश्वविद्यालय की स्थापना का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य जनजातीय ज्ञान परंपरा का संरक्षण एवं संवर्धन करना है, और विश्वविद्यालय इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि युवाओं की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि वे जनजातीय पारंपरिक ज्ञान को शोध एवं विज्ञान से जोड़कर समाज के सामने प्रस्तुत करें और उसे भावी पीढ़ियों तक पहुंचाए। उन्होंने यह भी कहा कि जनजातीय समाज की प्रकृति–पूजा और संरक्षण की परंपरा के कारण ही आज जल, जंगल और जमीन सुरक्षित हैं। साहित्यकार जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली' जी की 50वीं पुण्यतिथि के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विमर्श का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ताओं ने वनमाली जी के साहित्यिक अवदान और उनके जीवन–दर्शन पर विस्तार से प्रकाश डाला। यह आयोजन वनमाली सृजन पीठ, भाषा एवं साहित्य विभाग तथा आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. देवधर महंत ने वनमाली जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि अपने 64 वर्षों के जीवनकाल में उन्होंने साहित्य, शिक्षा और चिंतन के क्षेत्र में असाधारण कार्य किए। उनके संस्कारों और श्रेष्ठ कर्मों का ही परिणाम है कि उनके पुत्र श्री संतोष चौबे जी आज वैश्विक स्तर पर हिंदी का परचम लहरा रहे हैं। उन्होंने वनमाली जी को एक शिक्षाविद, साहित्यकार और चिंतक के रूप में स्मरण किया। डॉ. महंत ने विशेष रूप से वनमाली जी की चर्चित कहानियों 'जिल्दसाज' (1934) और 'पराया धन' पर विस्तार से चर्चा करते हुए उनके कथ्य, शिल्प और सामाजिक सरोकारों को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि इन कहानियों में उस समय के समाज की यथार्थपरक झलक मिलती है, जो आज भी

		उतनी ही प्रासंगिक है। उन्होंने यह भी कहा कि वनमाली जी की अनेक उत्कृष्ट कहानियों का समुचित मूल्यांकन और शोध होना चाहिए। ताकि युवा साहित्यकारों और समस्त साहित्य जगत को एक नई दिशा मिल सके। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अरविन्द कुमार तिवारी ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि साहित्य के पोषण और संवर्धन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर यह आयोजन पूर्णतः सार्थक सिद्ध हुआ है। उन्होंने विशेष रूप से नारी शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वनमाली जी ने अपने कार्यों की शुरुआत शिक्षा के दान से की और उस समय भी नारी शिक्षा को अत्यंत आवश्यक माना। आज बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का रूप उनकी ही सोच का यथार्थ रूप है। उन्होंने बताया कि जांजगीर की बहुउद्देशीय शाला में वनमाली जी को संस्थापक प्राचार्य के रूप में जाना जाता है। वनमाली सृजन पीठ के माध्यम से यह प्रयास किया जा रहा है कि प्रतिष्ठित साहित्यकारों के अनुभवों से नवोदित साहित्यकार सीख सकें और अपनी सृजनात्मक यात्रा को नई दिशा दे सकें।
17	विश्वविद्यालय के संचालन में आने वाली प्रशासनिक, अकादमिक एवं अन्य कठिनाईयों की जानकारी।	

कुलसचिव